OM 15_Page 1 and 2 13-10-2014 17:01 Page 12

सम्पूर्णता के लिए तीव्र पुरुषार्थ

स्वमान- मैं दिव्य बुद्धि के वरदान से सम्पन्न आत्मा हूँ।

शिवभगवानुवाच - ''बापदादा हर ब्राह्मण बच्चे को जन्म लेते ही विशेष दिव्य जन्मदिन की दिव्य सौगात 'दिव्य बुद्धि' देते हैं। दिव्य बुद्धि ही हर बच्चे को दिव्य ज्ञान, दिव्य याद, दिव्य धारणा स्वरूप बनाती है। दिव्य बुद्धि ही धारणा करने की विशेष गिफ्ट है। दिव्य बुद्धि में अर्थात् सतोप्रधान गोल्डन बुद्धि में ज़रा भी रजो तमो का प्रभाव पड़ता है तो धारणा स्वरूप के बजाए माया के प्रभाव में आ जाते हैं। सहज गिफ्ट के रूप में प्राप्त हुई दिव्य बुद्धि कमज़ोर होने के कारण मेहनत अनुभव करते हैं। जब भी मुश्किल वा मेहनत का अनुभव करते हो तो अवश्य दिव्य बुद्धि किसी माया के रूप से प्रभावित है। दिव्य बुद्धि वाले सेकण्ड में बापदादा की श्रीमत धारण कर सदा समर्थ, सदा अचल, सदा मास्टर सर्वशक्तिवान स्थिति का अनुभव करते हैं। श्रीमत अर्थात् श्रेष्ठ बनाने वाली मत। वह कभी मुश्किल अनुभव नहीं कर सकते। श्रीमत सदा सहज उड़ाने वाली मत है लेकिन धारण करने की दिव्य बुद्धि ज़रूर चाहिए। तो चेक करो कि अपने जन्म की सौगात सदा साथ है?''

सावधानी - ईश्वरीय दिव्य बुद्धि की गिफ्ट सदा छत्रछाया है लेकिन अगर माया अपनी छाया डाल देती है तो छत्र उड़ जाता है केवल छाया रह जाती है।

योगाभ्यास - दिव्य बुद्धि एक अलौकिक विमान है जिससे परमधाम व सूक्ष्म वतन की सैर सहज की जा सकती है...विशेष अमृतवेले एवं नुमाशाम के योग में दिव्य बुद्धि की गिफ्ट चेक करें कि वह साथ है? दिन भर आत्म-चिन्तन कर चेक करें कि उस पर माया का प्रभाव तो नहीं पड़ रहा है?

मनन-चिन्तन - वरदानों को साकार रूप में लाने के लिए क्या करें? दिव्य बुद्धि द्वारा क्या-क्या महान कार्य किए जा सकते हैं?

तीव्र पुरुषार्थियों के प्रति - दिव्य बुद्धि पुरुषार्थी जीवन में सफलता प्राप्त करने का सर्वोत्तम साधन है। बुद्धि की दिव्यता जितनी ज़्यादा उतना ही बापदादा व ब्राह्मण परिवार के स्नेह के पात्र बन सकते हैं। अत: ध्यान रखें कि कहीं इस गिफ्ट पर माया का प्रभाव न पड़े।

स्वमान - मैं रूद्र ज्ञान यज्ञ का सच्चा सेवाधारी हूँ।

शिवभगवानुवाच - ''सेवाधारी सेवा करने से स्वयं भी शक्तिशाली बनते हैं और दूसरों में भी शक्ति भरने के निमित्त बनते हैं। सच्ची रुहानी सेवा सदा स्व उन्नति और औरों की उन्नति के निमित्त बनाती है। दूसरे की सेवा करने से पहले अपनी सेवा करनी होगी। सेवा से डबल फायदा होता है अपने को भी और दूसरों को भी। सेवा में बिज़ी रहना अर्थात् सहज मायाजीत बनना। सेवाधारी बनना अर्थात् सहज विजयी बनना। सेवाधारी माला में सहज आ सकते हैं क्योंकि सहज विजयी हैं। तो विजयी विजय माला में आयेंगे। से-वाधारी का अर्थ है ताजा मेवा खाने वाले। ताजा फल खाने वाले बहुत हेल्दी होंगे। कितना भी कोई उलझन में हो - सेवा खुशी में नचाने वाली है। कितना भी कोई बीमार हो सेवा तन्दरूस्त करने वाली है। सभी सेवाधारी अर्थात् सदा सेवा के निमित्त बनी हुई आत्माएं। सदा अपने को निमित्त समझ सेवा में आगे बढ़ते रहो। मैं सेवाधारी हूँ, यह मैं-पन तो नहीं आता है ना। बाप करावनहार है, मैं निमित्त हूँ। कराने वाला करा रहा है। चलाने वाला चला रहा है - इस श्रेष्ठ भावना से सदा न्यारे और प्यारे रहेंगे। अगर यह भान आया कि मैं करने वाला हूँ तो न्यारे और प्यारे नहीं। तो सदा न्यारे और सदा प्यारे बनने का सहज साधन है करावनहार करा रहा है, इस स्मृति में रहना। इससे सफलता भी ज़्यादा और सेवा भी सहज। मेहनत नहीं लगती। कभी मैं-पन के चक्र में नहीं आते।''

योगाभ्यास - अमृतवेले आँख खुलते ही स्वयं को परमधाम में महाज्योति के सम्मुख अनुभव करें...शिव बाबा शक्तियों से सुसज्जित कर रहे हैं...वहाँ से उतरकर फरिश्तों की दुनिया में आ जाएं...सूक्ष्म वतन फरिश्तों की दुनिया...वहाँ सम्पूर्ण ब्रह्मा बाबा और शिव बाबा कम्बाइण्ड मुझे शक्तियों व गुणों से चार्ज कर रहे हैं...उसके पश्चात् स्वयं को सशक्त कर साकार लोक में अवतरित ईश्वरीय सेवाधारी के रूप में अपना सर्वश्रेष्ठ पार्ट बजाने के लिए तैयार हो जाएं...।

मनन-चिन्तन - सच्चे सेवाधारी की निशानियाँ व गुण क्या होंगे? सच्चे सेवाधारी को किन धारणाओं पर अधिक ध्यान रखना चाहिए?

तीव्र पुरुषार्थियों के प्रति - ब्रह्मा बाबा ने अंत तक स्वयं को सेवाधारी समझा...हमेशा निमित्त, निर्माण, निरहंकारी का स्वरूप प्रत्यक्ष किया। उन्होंने कभी स्वयं को इंचार्ज या मालिक नहीं समझा...सदा शिव बाबा को ही करावनहार व स्वयं को करनहार समझा...।

कोरे कागज़ सा मन ...

पेज 2 का शेष...

हैं। ग्रंथों के ग्रंथ भर दिए जाएं तो भी शब्दों में परमात्मा का अनुभव उतार नहीं सकते। उनके लिए तो कागज़ जैसा कोरा अंतर-मन रूपी आकाश में उतरना पड़े। अपने अंतर में उधार के ज्ञान का पार नहीं है। थोड़ा-बहुत कहाँ से भी पढ़ा और दिमाग में थोड़ा-बहुत आध्यात्मिक शब्द भर दिया और मान लिया कि हम बहुत बड़े ज्ञानी हो गये। एकनाथ का कहना है कि शब्दों का तो चाहे कितना भी संग्रह हो, अपने पास तो ये व्यर्थ हैं। अंदर जब तक नि:शब्द और शून्य न बनें तब तक परमात्मा के अनहद-नाद को अनुभव नहीं कर सकते। अंदर की अकुलाहट जब शांत हो तब ही यह संगीत सुन सकते हैं। अपने मन में और अंतर में राग-द्वेष, काम-क्रोध,मेरा-तेरा, अहंकार, वासनाओं का पार नहीं है। यह सब जिस घड़ी शांत होता है और खाली होता है, उसी घड़ी यह शून्य हुए कोरे (निर्दोष) अंतर में परमात्मा का अनुभव उतरता है। इस कोरे पत्र द्वारा संत एकनाथ ने हमें ऐसा ही संदेश भेजा है और इसलिए ही हम अनुग्रहित और आनंदित हैं।

उन्होंने जो कोरा कागज़ भेजा यह तो समझ में आता है, लेकिन जवाब में आपने वैसा ही कोरा पत्र वापिस भेजा उसका क्या अर्थ?

इसका अर्थ इतना ही है कि जिस ऊंचाई से उन्होंने (एकनाथ) बात की है उसे हम समझ गये हैं। जो बात शब्दों में कहकर समझा नहीं सकते उनका जवाब भी नि:शब्द होकर दिया जा सकता है। इसीलिए ही जवाब के रूप में हम भी कोरा कागज़ पत्र भेज रहे हैं। इसे संत एकनाथ ज़रूर पढ़ सकेंगे।

काल करे सो आज कर,
आज करे सो अब।
पल में परलय होयगी,
बहुरि करोगे कब।।

जबलपुर-नेपियर टाऊन। चैतन्य देवियों की झाँकी के उद्घाटन अवसर पर उपस्थित गीता शरत तिवारी, उपाध्यक्ष महिला कांग्रेस,म.प्र., ब्र.कु. भावना तथा अन्य।

तपा-मण्डी(पंजाब)। मालवा नर्सिंग कॉलेज मैहलकला में 'तनाव से तन्दुरुस्ती' विषयक कार्यक्रम के बाद समूह चित्र में ब्र.कु. डॉ. लेखराम, विद्यार्थी तथा कॉलेज स्टाफ।

शांतिवन। स्पार्क कॉन्फ्रेन्स का दीप प्रज्वलन कर उद्घाटन करते हुए दादी रतनमोहिनी, स्पार्क विंग के अध्यक्ष ब्र.कु. रमेश शाह, ब्र.कु. मोहिनी, ब्र.कु. मुन्नी तथा अन्य।

डिवरुगढ़। गीतापाठशाला का उद्घाटन करते हुए ऐरोड्रॉम मैनेजर किशोर शर्मा, श्रीमती शर्मा, ब्र.कु. बिनीता, ब्र.कु. बिधान तथा अन्य।

गाज़ियाबाद। साहिबाबाद रोडवेज़ डिपो वर्कशॉप में ''तनाव मुक्ति तथा स्ट्रेस मैनेजमेंट' विषय पर आयोजित कार्यक्रम के बाद पल्लव बोस,क्षेत्रीय प्रबंधक रोडवेज़ को ओमशान्ति मीडिया पत्रिका भेंट करते हुए ब्र.कु. राजेश बहन। साथ हैं ब्र.कु. संजय,माउण्ट आबू तथा अन्य।

कोचीन। प्रवासी मलयाली एकता दिवस पर ग्लोबल कॉन्फेडरेशन ऑफ प्रवासी मलयालीज़ की ओर से पी.सी. जॉर्ज,चीफ विप,केरला सरकार द्वारा राष्ट्र सेविका अवार्ड प्राप्त करते हुए ब्र.कु. राधा। साथ हैं मंच पर उपस्थित गणमान्य व्यक्ति।

सहारनपुर। शाकुम्भरी देवी मेले में नवरात्रि के अवसर पर प्रदर्शनी का उद्घाटन करने के पश्चात् समूह चित्र में पूर्व विधायक रविन्द्र मोल्हू, पूर्व विधायक मजारा जी, ब्र.कु. उर्मिला तथा अन्य।

गया-करीमगंज। 'सम्पूर्ण स्वास्थ्य शिविर' में सम्बोधित करते हुए ब्र.कु. जमिला,नेचरोपैथिस्ट,माउण्ट आबू। साथ हैं पार्षद निहाल अहमद, एडवोकेट इज़ाकत हुसैन तथा ब्र.कु. सुनीता।